

M. T. B. COLLEGE, SURAT

*Manuscripts Library*

No. Ref.

Ser. 1052

Title: *Kalmatai Kala*



1052

Complete

C

Kalaratri Vrati

: Title

:

:

: Author

:

:

: Editor

:

:

: Year, Vols.

:

:

: Publisher

SK : 1052

:

4/12/51

: Mithi - Ealam + Tolu : Remarks





विक्रंठ गतिमाप्नोति विस्मोरयत वलनन... वापि तात त...  
शीसाश्रुवमाप्नोति सोनागपे जन्म जन्म नि... एवय...  
पोत्रेश ममाश्रुत धनधान्य ममाश्रुत गुरुतस्तानि विष्टोतर फल... सल्लुधिर मयादे  
कालरात्रिप्रत... ममाश्रुत... स्वस्ति श्रीमयत १५३ वर्षे दिन... वा ७ वदि ११ शुके  
नित्तमेव पाश्चात्... ना ज्ञातुत तत्कदा मे भव...  
३॥ श्री॥ ६॥ श्री॥ श्री॥ ६॥ श्री॥ ६॥ कल्याणमस्तु ॥ नमो गणेशाय ॥ श्री॥

श्रीकृष्णपराजित  
१५३



एवं सर्वं शरस्योते उद्यापन विधिः शुभं ॥ १३ ॥ माहा मायामंडलं चैव तिलतैले श्रुतं रयतां शुभं  
नयथा शरस्योते उद्यापन विधिः शुभं ॥ १४ ॥ पुष्ट पक्षवमूलानि पायसेन त्रुहो मयेत् ॥ जातवेद  
सेति मंत्रेण होमयेत् ॥ शुभं ॥ गौतमः स्नाश्च प्रदास्यामि नमस्कृत्य ॥ अयुतां शुभं च य  
॥ १५ ॥ प्रोयतामि ॥ १६ ॥ उमा महेश्वरं शरस्योपददानं चित्रोषतः ॥ अनेन कथं माणे  
न रोगा रोगान् प्रमुच्यते ॥ १७ ॥ यस्तु सर्वं न वृत्ताम्फ न च विद्वादि जायते ॥ रणे राज कले धूतस  
र्वत्र विजयी भवेत् ॥ १८ ॥ शुभं जपते निश्चैः शाक्तोक्तो विधिमान् ॥ नृत्त सास वायु मि वि स्तु नव  
यवन संशयः ॥ १९ ॥ येन नृत्त विधिना व्रते मंत्रयशश्च नो ॥ पूजिता ॥ २० ॥ शुभं जपते तदेव क  
थयामि तं ॥ २१ ॥ नृत्त दत्तं विप्राय तत्तं शाय मेमेव च ॥ मतिता नृत्तं ॥ २२ ॥ पश्चात् नृत्तं  
कामतः ॥ २३ ॥ पूजिता मियथा शक्त्या च ॥ २४ ॥ नृत्तं पश्चात् विधिना नृत्तं ॥ २५ ॥ व्रते प्रसूतया कुरु ॥ २६ ॥  
॥ २७ ॥ पिशक नवने ॥ २८ ॥ दिवौ कसे कल्पको शिशत मे कुरु ॥ २९ ॥ धन धान्यं ॥ ३० ॥ समायुक्तः ॥ ३१ ॥ पुत्रपौत्रय मंत्रि  
तः ॥ ३२ ॥ कालरात्रि ॥ ३३ ॥ प्रजावेन संतति ॥ ३४ ॥ अम्यनिश्चला ॥ ३५ ॥ तस्य ॥ ३६ ॥ विनम्र वक्रं दोधनं

[illegible]



